# कुर्रतुल-ऐन-हैदर के उर्दू उपन्यास 'सीता हरण' का हिंदी अनुवाद एवं समस्याएँ

प्रस्तुतकर्ता

**अहमद ख़ान**

अनुवाद अध्ययन एम. फिल.

सत्र- 2014-2015

महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय

वर्धा – 442 001 (महाराष्ट्र) भारत

ak979303@gmail.com Mobile No. +917741041356

## शोध सारांश

किसी भी भाषा एवं साहित्य के विकास में अनुवाद की महत्वपूर्ण भूमिका होती है। नई उपलब्धियों को संपूर्ण जन तक पहुँचाने में अनुवाद ही सहायक रूप में काम करता है। नवीन ज्ञान-विज्ञान से लाभान्वित होने के लिए तथा अन्य भाषाओं के प्रसिद्ध साहित्यिक सौंदर्य से परिचय प्राप्त करने के लिए अपनी भाषा में उस भाषा की रचनाओं का अनुवाद अत्यंत आवश्यक है तथा साथ ही अनुवाद विभिन्न भाषा-भाषी लोगों को एक दूसरे के समीप लाने में सहायता करता है।

अनुवादक आज पुनः सर्जक हो गया है। वह दो संस्कृतियों, विचारधाराओं, चिंतन-परंपरों, भाषिक संस्कारों, रीति-रिवाजों एवं भाव-धारणाओं के बीच सेतु निर्माण का कार्य करने लगा है। भारत जैसे बहुभाषिक देश में अनेक कृतियों का अनुवाद हिंदी से उर्दू एवं उर्दू से हिंदी भाषा में हुआ है। इन प्रसिद्ध कृतियों के किसी अन्य भाषा में अनुवाद होने से इन दोनों भाषों के साहित्यिक क्षेत्र में बहुत अधिक विकास हुआ है और आधुनिक युग में विभिन्न भाषाओं के प्रसिद्ध कृतियों का अनुवाद किसी दूसरी भाषा में आज भी हो रहा है।

उर्दू की प्रसिद्ध साहित्यकार रहीं कुर्रतुल-ऐन-हैदर, हिंदी-उर्दू की मिश्रित परंपरा की कड़ी थीं। वे इस बात को संजीदगी के साथ महसूस करती थीं कि हिंदी-उर्दू की मिली-जुली परंपरा ही दोनों देशों को तरक़्क़ी के रास्ते पर ले जा सकती है। आधुनिक काल में कथा साहित्य कुर्रतुल-ऐन-हैदर पर एक ऐसी आलोचनात्मक दृष्टि डालने की आवश्यकता है, जो कथा-साहित्य के सामान्य दृष्टियों से हटकर कलात्मक सूक्ष्मता की पड़ताल कर सके और इनकी असाधारण लोकप्रियता के तत्त्वों से हम भी परिचित हो सकें।

कुर्रतुल-ऐन-हैदर की कई कहानियों के शीर्षक मानवीय समस्याओं से लेखिका के निकट संबंध का पता चलता हैं 'अगले जनम मोहे बिटिया न की ज्यौ' और 'सीता हरण' जैसे शीर्षक उल्लेखनीय है। कुर्रतुल-ऐन-हैदर का लघु उपन्यास सीता हरण सन् 1960 के लगभाग एक गंभीर समस्या को केंद्र में रख कर लिखा गया है। इस उर्दू कृत लघु उपन्यास में सीता के नाम से संबंध पवित्रता को लिए जो मनोवृत्तियाँ हैं, उनको सीता मीर चंदानी की तन्हाई और जज़्बाती जलावतनी के अहसास में शरीक होकर देखा जा सकता है। इसी कृति को व्यावहारिक रूप से हिंदी भाषा में लाने का प्रयास किया गया है।

किसी भी भाषा की कृति का अन्य भाषा में अनुवाद करने पर अनुवादक को अनेक समस्याओं का सामना करना पड़ता है। हैदर के इस उर्दू कृत लघु उपन्यास सीता हरण के हिंदी अनुवाद में अनेक समस्याएँ आईं। जिसमें भाषिक समस्याओं के विभिन्न स्तरों पर उदाहरण सहित स्पष्ट रूप से प्रस्तुत करने का प्रयास किया गया है।

अतः इस लघु शोध-प्रबंध विषय का मुख्य उद्देश्य उर्दू-हिंदी अनुवाद एवं इन दोनों भाषाओं के मध्य विभिन्न स्तरों पर आने वाली समस्याओं को सामने लाना है। प्रस्तुत लघु शोध में उर्दू भाषा में लिखित कृति का हिंदी अनुवाद एवं समस्याएँ केंद्र रूप में है तथा अनुवाद ही इस शोध की संभावना है।

# ‘Sita Haran’ Urdu Novel by Qurratul-Ain-Hyder : A study of problems occurred in Urdu-Hindi translation

Presented By :

**Ahmad Khan**

M.Phil Translation Studies
Session- 2014-2015
MAHATMA GANDHI ANTARRASASHTRIYA HINDI VISHWVIDYALAYA
WARDHA – 442 001 (MAHARASHTRA) INDIA
ak979303@gmail.com Mobile No. +917741041356

## ABSTRACT

Translation plays a vital role for the development of any language and literature. Through the translation we get new achievement and reach it total mass of people. To benefit from new science and other languages to get acquainted with the famous literary beauty in your language in essential as well as the different languages. It brings people to closer to each very comfortably.

Today translation has re-created. It began and construct like a bridge between two cultures, thought-Problem, linguistic culture, custom and sense perceptions. Like India, multilingual country numbers of translated work occur from Hindi to Urdu and Hindi to Urdu languages. These famous works in literary field has grown much more. Be translated of these languages and any other language and in the modern era various famous languages works translated into another language in still going on. The famous Urdu literature Qurratul-Ain-Hyder was a tradition of Hindi-Urdu. They used to feel with sincerity that mixed tradition of Hindi-Urdu may be on the way from the progress of two countries. In modern time Qurratul-Ain-Hyder need to insert critical fiction who could generalize the fiction of

literature story explores, artistic subtlety and we are familiar the elements of extraordinary popularity.

In Qurratul-Ain-Hyder story shows the several problems related to humanity. “Agale Janam mohe bitiya na ki  Jiyo” and “Sita Haran” is the renewable title. The novel of Sita Haran by Qurratul-Ain-Hyder problems had been written on 1960 in which keeping serious. This Urdu integrated novel shows the holistic nealation of Sita. In which we can see and realize coneliness of Sita Mirchandani and her emotional relegation through participating, this literature has been trying to bring in Hindi language.

Translator faces many problem during the translating and literature and I also faces lots of problem during the transaltion of Sita Haran. But inspirit of this I had tried to clearly all languages problem through an example.

So, the main objective of my research to bring problem which have been faced during the translation. Given research shows the problem of translating from Urdu into Hindi in aspect of various from the translation in expected of this research.